''मीठे बच्चे – सतगुरू का सहज वशीकरण मन्त्र तुम्हें मिला हुआ है कि चुप रहकर मामेकम् याद करो, यही माया को अधीन करने का महामन्त्र है''

प्रश्नः- शिवबाबा ही सबसे भोला ग्राहक है – कैसे?

उत्तरः- बाबा कहते – बच्चे, तुम्हारे पास देह सहित जो भी पुराना कचरा है वह मैं लेता हूँ, सो भी तब जब तुम मरने पर हो। तुम्हारे सफेद कपड़े भी मरने की ही निशानी हैं। तुम अभी बाप पर बलि चढ़ते हो। बाप फिर 21 जन्मों के लिए तुम्हें मालामाल कर देते हैं। भक्ति मार्ग में भी बाप सबकी मनोकामनायें पूर्ण करते हैं, ज्ञान मार्ग में भी सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान दे त्रिकालदर्शी बनाते हैं।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) ज्ञान रत्न जो मिलते हैं उन पर विचार सागर मंथन कर स्वयं में धारण करना है। ज्ञान रत्नों से सदा भरपूर रहना है।

2) अपने नारायणी नशे में रहना है, वाह्यात बातें किसी से भी नहीं करनी है। अशरीरी बनने का अभ्यास करना है।

वरदानः- दुआ और दवा द्वारा तन-मन की बीमारी से मुक्त रहने वाले सदा सन्तुष्ट आत्मा भव

कभी शरीर बीमार भी हो तो शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो। सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को चलाओ तो दोनों एक्सरसाइज हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों से तन मन की बीमारी से मुक्त हो जायेंगे। खुशी से दर्द भी भूल जायेगा। सदा तन-मन से सन्तुष्ट रहना है तो ज्यादा सोचो नहीं। अधिक सोचने से टाइम वेस्ट होता है और खुशी गायब हो जाती है।

स्लोगनः- विस्तार में भी सार को देखने का अभ्यास करो तो स्थिति सदा एकरस रहेगी।

''मीठे बच्चे – कल्याणकारी बाप अभी तुम्हारा ऐसा कल्याण कर देते हैं जो कभी रोना न पड़े, रोना अकल्याण वा देह-अभिमान की निशानी है''

प्रश्नः- किस अटल भावी को जानते हुए तुम्हें सदा निश्चिंत रहना है?

उत्तरः- तुम जानते हो कि इस पुरानी दुनिया का विनाश अवश्य होना है। भल पीस के लिए प्रयास करते रहते हैं लेकिन नर चाहत कुछ और... कितना भी कोशिश करें यह भावी टल नहीं सकती। नैचुरल कैलेमिटीज़ आदि भी होनी हैं। तुम्हें नशा है कि हमने ईश्वरीय गोद ली है, जो साक्षात्कार किये हैं, वह सब प्रैक्टिकल में होना ही है, इसलिए तुम सदा निश्चिन्त रहते हो।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) शरीर निर्वाह अर्थ काम करते देही-अभिमानी रहने का अभ्यास करना है। किसी भी परिस्थिति में रोना वा देह-अभिमान में नहीं आना है।

2) श्रीमत पर अपना और दूसरों का कल्याण करना है। सपूत बन बाप का नाम बाला करना है।

वरदानः- व्यर्थ संकल्पों को समर्थ में परिवर्तित कर सहजयोगी बनने वाली समर्थ आत्मा भव

कई बच्चे सोचते हैं कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग तो लगता नहीं, अशरीरी होते नहीं – यह हैं व्यर्थ संकल्प। इन संकल्पों को परिवर्तित कर समर्थ संकल्प करो कि याद तो मेरा स्वधर्म है। मैं ही कल्प-कल्प का सहजयोगी हूँ। मैं योगी नहीं बनूँगा तो कौन बनेगा। कभी ऐसे नहीं सोचो कि क्या करूँ मेरा शरीर तो चल नहीं सकता, यह पुराना शरीर तो बेकार है। नहीं। वाह-वाह के संकल्प करो, कमाल गाओ इस अन्तिम शरीर की, तो समर्थी आ जायेगी।

स्लोगनः- शुभ भावनाओं की शक्ति दूसरों की व्यर्थ भावनाओं को भी परिवर्तन कर सकती है।

''मीठे बच्चे – मैं तुम्हें फिर से राजयोग सिखलाकर राजाओं का राजा बनाता हूँ, इस 'फिर से' शब्द में ही सारा चक्र समाया हुआ है''

प्रश्नः- बाप भी प्रबल है तो माया भी? दोनों की प्रबलता क्या है?

उत्तरः- बाप तुम्हें पतित से पावन बनाते, पावन बनाने में बाप प्रबल है इसलिए बाप को पतित-पावन सर्व-शक्तिमान् कहा जाता है। माया फिर पतित बनाने में प्रबल है। सच्ची कमाई में ग्रहचारी ऐसी बैठती है जो फायदे के बदले घाटा हो जाता है, विकारों के पीछे माया तवाई बना देती है इसलिए बाबा कहते – बच्चे, देही-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करो।

गीतः- हमें उन राहों पर चलना है...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर रहे इसके लिए देही-अभिमानी रहना है। सच्ची कमाई में माया किसी प्रकार से घाटा न डाल दे – यह सम्भाल करनी है।

2) कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना है। इन्श्योर करने के बाद सर्विस भी जरूर करनी है।

वरदानः- माया को दुश्मन के बजाए पाठ पढ़ाने वाली सहयोगी समझ एकरस रहनेवाले मायाजीत भव

माया आती है आपको पाठ पढ़ाने के लिए, इसलिए घबराओ नहीं, पाठ पढ़ लो। कभी सहनशीलता का पाठ, कभी शान्त स्वरूप बनने का पाठ पक्का कराने के लिए ही माया आती है, इसलिए माया को दुश्मन के बजाए अपना सहयोगी समझो तो घबराहट में हार नहीं खायेंगे, पाठ पक्का करके अंगद के समान अचल बन जायेंगे। कभी भी कमजोर बन माया का आह्वान नहीं करो तो वह विदाई ले लेगी।

स्लोगनः- हर संकल्प में दृढ़ता की महानता हो तो सफलता मिलती रहेगी।

''मीठे बच्चे – पुरानी दुनिया से ममत्व छोड़ सर्विस करने का उमंग रखो, हुल्लास में रहो, सर्विस में कभी थकना नहीं है''

प्रश्नः- जिन बच्चों को ज्ञान का नशा चढ़ा होगा, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः- उन्हें सर्विस का बहुत-बहुत शौक होगा। वह सदा मन्सा और वाचा सेवा में तत्पर रहेंगे। सबको बाप का परिचय दे सबूत देंगे। बादशाही स्थापन करने निमित्त सहन भी करना पड़े तो सहन करेंगे। बाप के पूरे-पूरे मददगार बन भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करेंगे।

गीतः- माता ओ माता तू सबकी भाग्य विधाता...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बुद्धियोग एक बाप से रखना है, मनमनाभव के छू मंत्र से इस दुनिया को स्वर्ग बनाना है।
2) सर्विस में कभी थकना नहीं है। स्थूल सेवा के साथ-साथ रूहानी सेवा भी करनी है। मनमनाभव का मन्त्र सबको याद दिलाना है।

वरदानः- बाप समान हर आत्मा पर कृपा वा रहम करने वाले मास्टर रहमदिल भव

जैसे बाप रहमदिल है, ऐसे आप बच्चे भी सब पर कृपा वा रहम करेंगे क्योंकि बाप समान निमित्त बने हुए हो। ब्राह्मण आत्मा को कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा नहीं आ सकती। चाहे कोई कंस हो, जरासंधी हो या रावण हो – कोई भी हो लेकिन फिर भी रहमदिल बाप के बच्चे घृणा नहीं करेंगे। परिवर्तन की भावना, कल्याण की भावना रखेंगे क्योंकि फिर भी अपना परिवार है, परवश है, परवश के ऊपर घृणा नहीं आती।

स्लोगनः- मास्टर ज्ञानसूर्य बन शक्तियों रूपी किरणों से कमज़ोरी रूपी किचड़े को भस्म कर दो।

''मीठे बच्चे – यहाँ धारणा कर दूसरों को भी जरूर करानी है, पास होने के लिए माँ-बाप समान बनना है, जो सुनते हो वह सुनाना भी है''

प्रश्नः- बच्चों में कौन-सी शुभ कामना उत्पन्न होना भी अच्छे पुरूषार्थ की निशानी है?

उत्तरः- बच्चों में यदि यह शुभ कामना रहती है कि हम मात-पिता को फॉलो कर गद्दी पर बैठेंगे तो यह भी बहुत अच्छी हिम्मत है। जो कहते हैं – बाबा, हम तो पूरा इम्तहान पास करेंगे, यह भी शुभ बोलते हैं। इसके लिए जरूर पुरूषार्थ भी इतना तीव्र करना है।

गीतः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) शिवबाबा के घर का अव्यभिचारी राही बन योगबल से विकर्मों को दग्ध करना है। ज्ञान का सिमरण कर अपार खुशी में रहना है।
2) बाप समान गद्दी नशीन बनने की शुभ कामना रखते हुए बाप को पूरा फॉलो करना है।

वरदानः- शीतला देवी बन सर्व कर्मेन्द्रियों को शीतल शान्त बनाने वाले स्वराज्य अधिकारी भव

जो स्वराज्य अधिकारी बच्चे हैं, उन्हें कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा नहीं दे सकती। जब धोखा देने की चंचलता समाप्त हो जाती है तब स्वयं शीतला देवी बन जाते और सब कर्मेन्द्रियाँ भी शीतल हो जाती। शीतला देवी में कभी क्रोध नहीं आता। कई कहते हैं क्रोध नहीं है, थोड़ा रोब तो रखना पड़ता है। लेकिन रोब भी क्रोध का अंश है। तो जहाँ अंश है वहाँ वंश पैदा हो जाता है। तो शीतला देवी और शीतल देव हो इसलिए स्वप्न में भी क्रोध वा रोब का संस्कार इमर्ज न हो।

स्लोगनः- आज्ञाकारी बच्चे स्वतः आशीर्वाद के पात्र होते हैं, उन्हें आशीर्वाद माँगने की दरकार नहीं।

''मीठे बच्चे – एक बाप के साथ सच्ची मोहब्बत हो तो बाप तुम्हें अपने साथ घर ले जायेंगे, सब पापों से मुक्त कर देंगे, स्वर्ग का मालिक बना देंगे''

प्रश्नः- अपने आपको खुशी में रखने के लिए कौन-सी मुख्य धारणा चाहिए?

उत्तरः- खुशी में तभी रह सकते जब अपने आपसे रूह-रिहान करना आता हो। किसी भी चीज़ में आसक्ति न हो। दो रोटी पेट को मिले, बस – ऐसी अनासक्त वृत्ति की धारणा हो तब हर्षित रहेंगे। ज्ञान का मनन कर स्वयं को हर्षित रखो। तुम कर्मयोगी हो, कर्म करते, घर का काम करते, खाना आदि खाते भी बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र बुद्धि में घूमता रहे, तो बहुत खुशी रहेगी।

गीतः- न वह हमसे जुदा होंगे...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) चलते-फिरते लाइट हाउस बन सभी को रास्ता बताना है। सब आशायें छोड़ एक बाप की याद में रहना है। बाप से राय लेते रहना है।
2) ज्ञान की बातों में ही रमण करना है। अपने आपसे बातें करनी है। स्वदर्शन चक्र फिराते सदा हर्षित रहना है।

वरदानः- योग की धूप में आँसुओं की टंकी को सुखाकर रोना प्रूफ बनने वाले सुख स्वरूप भव

कई बच्चे कहते हैं कि फलाना दु:ख देता है इसलिए रोना आता है। लेकिन वह देते हैं आप लेते क्यों हो? उनका काम है देना, आप लो ही नहीं। परमात्मा के बच्चे कभी रो नहीं सकते। रोना बन्द। न आँखों का रोना, न मन का रोना। जहाँ खुशी होगी वहाँ रोना नहीं होगा। खुशी वा प्यार के आँसू को रोना नहीं कहा जाता। तो योग की धूप में आँसुओं की टंकी को सुखा दो, विघ्नों को खेल समझो तो सुख स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगनः- साक्षी रहकर पार्ट बजाने का अभ्यास हो तो टेन्शन से परे स्वतः अटेन्शन में रहेंगे।

''साथी को साथ रख साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहो''

- आज विश्व कल्याणकारी बाप विश्व के चारों तरफ के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं।
- वर्तमान समय आप बच्चों की विश्व को इस सेवा की आवश्यकता है जो चेहरे से, नयनों से, दो शब्द से हर आत्मा के दु:ख को दूर कर खुशी दे दो। आपको देखते ही खुश हो जाएँ इसलिए खुशनुमा चेहरा या खुशनुमा मूर्त सदा रहे क्योंकि मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है।
- चाहे कोई अपमान करने वाला हो, आपको परेशान कर अपने साक्षीपन की शान से नीचे उतारने वाले हों, लेकिन आप साक्षीपन की सीट से नीचे नहीं आओ। नीचे आ जाते हो तभी खुशी कम हो जाती है।
- जब बापदादा साथ है तो साक्षीपन की सीट सदा मजबूत रहती है। एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है।

वरदान:- परखने वा निर्णय करने की शक्ति द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सफलतामूर्त भव

जो परखने की शक्ति द्वारा बाप को, अपने आपको, समय को, ब्राह्मण परिवार को और अपने श्रेष्ठ कर्तव्य को पहचान कर फिर निर्णय करते हैं कि क्या बनना है और क्या करना है, वही सेवा करते, कर्म वा संबंध सम्पर्क में आते सदा सफलता प्राप्त करते हैं। मन्सा-वाचा-कर्मणा हर प्रकार की सेवा में सफलतामूर्त बनने का आधार है परखने और निर्णय करने की शक्ति।

स्लोगन:- ज्ञान योग की लाइट माइट से सम्पन्न बनो तो किसी भी परिस्थिति को सेकेण्ड में पार कर लेंगे।